**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 116-119**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

# कुमाऊँ में वृद्धजनों की समस्या का समाजशास्त्रीय अध्ययन

**1. मनदीप बिढ़ाण**
**2. प्रो0 इला साह**

1. शोध अध्येत्री, 2. विभागाध्यक्ष – समाजशास्त्र विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) भारत

**Received-16.04.2025, Revised-23.04.2025, Accepted-29.04.2025** **E-mail : mandeepbidhan0001@gmail.com**

***सारांशः*** ***वृद्धावस्था एक स्वाभाविक, अनिवार्य व सार्वभौमिक घटना है। कोई भी नागरिक जिसकी आयु 60 वर्ष या इससे अधिक पायी जाती है। उसको वरिष्ठ, वृद्ध या बुजुर्गों की श्रेणी में सम्मिलित किया जाता है। प्राचीन कालीन संयुक्त परिवारों में इनकी नियंत्रण, निर्देशन व महत्वपूर्ण निर्णयात्मक शक्ति का अत्यधिक सम्मान किया जाता था। जैसे–जैसे वर्तमान समय में विभिन्न कारणों से क्रांतिकारी परिवर्तन हुए उसके कारण छोटे परिवारों में रहने की लालसा, भौतिकवादी जीवन शैली के कारण वृद्धों को भावात्मक उपेक्षा व सहयोग की कमी का सामना करना पड़ रहा है। वर्तमान युवा उनके द्वारा स्थापित मूल्यों को स्वीकार करने में स्वयं को पिछड़ा हुआ अनुभव करने लगे है, पारिवारिक सदस्यों के लिए वे बोझ समझे जाते है, निर्णयात्मक शक्ति की शिथिलता, पारिवारिक अनदेखी आदि अनेक कारणों से वे स्वयं को अकेला अनुभव करने लगते है और घबराहट, तनाव, असहायता, निर्बलता का अहसास उनमें नकारात्मक भावनाओं को विकसित कर उनके शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते है जिसके कारण इनका सामाजिक संपर्क भी काफी सीमित हो जाता है।***

***अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि हमारे संरक्षण, ज्ञान के भण्डार, पारिवारिक–सामाजिक मूल्यों के संस्थापक आज सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के वशीभूत होकर तिरस्कार, असहाय व अपमानित हो रहे है वे स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रहे है। अपने ही द्वारा निर्मित परिवार में स्वयं को ठगा हुआ महसूस कर रहे है, ऐसा क्यों? अतः प्रस्तुत शोध पत्र में वृद्धजनों के सम्मुख उत्पन्न समस्याओं को स्पष्ट किया जायेगा।***

***कुंजीभूत शब्द– वृद्धावस्था, स्वाभाविक, अनिवार्य, सार्वभौमिक घटना, निर्णयात्मक शक्ति, क्रांतिकारी परिवर्तन, निर्णयात्मक शक्ति***

**प्रस्तावना –**प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कुमाऊँ में निवासित वृद्धजनों की समस्याओं का अध्ययन करना है। वृद्धावस्था एक स्वाभाविक व प्राकृतिक प्रक्रिया है। जिसमें प्रत्येक प्राणी को गुजरना पड़ता है। कोई भी नागरिक जिसकी आयु 60 वर्ष या उससे अधिक हो को वृद्ध, वरिष्ठजन या बुजुर्गों की श्रेणी में रखा जाता है। प्राचीन कालीन संयुक्त परिवारों में इन वृद्धों की महत्वपूर्ण व अनूठी शक्ति को नियंत्रक निर्देशन व निर्णायक की भूमिका मे सम्मान व आदरपूर्वक देखा जाता था। ये शक्तियाँ वर्तमान में भी पायी जाती है, लेकिन पूर्व की स्थितियों में काफी परिवर्तन दिखायी पड़ता है और छोटे परिवारों में रहने की लालसा, आधुनिक भौतिकवादी जीवन शैली, स्वतंत्र जीवन की चाह, वृद्धजनों के प्रति भावनात्मक उपेक्षा आदि को इनके कारणों के रूप में देखा जा सकता है।

वर्तमान युवा इनके द्वारा स्थापित मूल्यों को स्वीकार करने में स्वयं को पिछड़ा महसूस कर रहे हैं, पारिवारिक सदस्य उन्हें बोझ समझ रहे हैं। निर्णायात्मक शक्ति की शिथिलिता, मूल्यों की टकराहट पारिवारिक सदस्यों की अनदेखी आदि अनेक कारणों से वृद्धजन स्वयं को एकाकी अनुभव कर रहे हैं, स्वयं को इन नवीन परिस्थितियों में ढ़ालने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं। इस प्रकार एकाकीपन, तनाव, असहायपन, घबराहट आदि प्रवृत्तियों से उनमें नकारात्मक भाव व असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो रही है और इसका सीधा प्रभाव उनके मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य को काफी प्रभावित कर रहा है।

''जहाँ विकसित देशों में 65 वर्ष की आयु प्राप्त करने के पश्चात लोग वृद्धजनों की श्रेणी में आते हैं। वही विकासशील देशों में जैसे कि भारत में अपेक्षाकृत कम जीवन संभाव्यता के कारण यह अवधि 60 वर्ष मानी जाती है।'' वृद्धजनों की समस्याओं का इतिहास काफी पुराना है। यह उम्र सापेक्ष अवसर व जिम्मेदारियों में नाटकीय परिवर्तन की ओर संकेत करता है। इन परिस्थतियों का विधिवत् अध्ययन जेरेन्टोलॉजी Gerentology में किया जाता है। ''इसमें वृद्धजनों की बढ़ती उम्र के भौतिक, जैवकीय पक्षों के साथ–साथ सामाजिक व सांस्कृतिक कारणों का विश्लेषण भी किया जाता है जो आयु में वृद्धि के सकारात्मक/नकारात्मक दोनों पक्षों को प्रभावित करते हैं।'' वृद्धावस्था को विद्वानों द्वारा अलग–अलग रूप से परिभाषित किया गया है। **भाटिया का मानना है कि** ''वृद्धावस्था के अंतर्गत सामान्यतया वे परिवर्तन आते हैं। जो जीवन के बाद वाले भाग में घटित होते हैं।''

अतः स्पष्ट है कि वृद्धावस्था ''एक विश्वव्यापी परिदृश्य है और विश्व में वृद्धों की संख्या व जनसंख्या अनुपात दोनों में वृद्धि हो रही है।''

**साहित्य सर्वेक्षण –** विभिन्न विद्वानों द्वारा समय–समय पर विभिन्न क्षेत्रों में निवासित वृद्धजनों पर अध्ययन कर उनकी स्थितियों को प्रस्तुत किया गया है, **देव तथा दांडेकर ने (1993)** में पंजाब एवं महाराष्ट्र के ग्रामीण बुजुर्गों का अध्ययन कर स्पष्ट किया कि यहाँ निर्वासित युवाओं के मनोभावों में वृद्धों के प्रति सकारात्मक है।'' **इन्दिरा जय प्रकाश ने (1997)** में वृद्ध महिलाओं पर किये गये अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि महिलाओं को वृद्ध होने के बाद जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उसके प्रमुख तीन कारक है जिसमें वृद्ध होना, स्त्री होना व गरीब होना को सम्मिलित किया है।''

अतः स्पष्ट है कि वृद्ध होना न तो कोई बीमारी है और न ही कोई अभिशाप है, यदि हम सोच तो आज भी इनका स्थान हमारे परिवार, देश की संस्कृति तथा समाजिक संस्थानों में सर्वोपरि है, लेकिन परिवर्तनशील परिस्थिति, व्यक्तिवादिता तथा भौतिकवादी संस्कृति के कारण आदर, सम्मान उन्हें नहीं मिल पाता है जिसकी उन्हें उपेक्षा होती है और वे उसके हकदार भी हैं और न ही उनकी उचित देख रेख हो पाती है जिससे उनमें असुरक्षा का भाव उत्पन्न होता है। इसी की वास्तविकता को जानने के लिए प्रस्तुत अध्ययन में कुमाऊँ के वृद्धजनों की समस्याओं को जानने का प्रयास किया गया है।

**शोध पत्र के उद्देश्य –**

**1.** वृद्धजनों की विभिन्न प्रस्थितियों का अध्ययन करना।

**2.** प्रस्थितियों के आधार पर समस्याओं को जानना।

**शोध अभिकल्प व पद्धतिशास्त्र –** प्रस्तुत शोध पत्र अन्वेष्णात्मक तथा विवरणात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है, इसके लिए उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल के जनपद अल्मोड़ा के हवलबाग में निवासित वृद्धजनों को इकाई के रूप में चुना गया है, जनपद अल्मोड़ा के 12 ब्लाकों में हवलाबाग सबसे बड़ा ब्लाक है, 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 72,613 है जिसमें

**अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

35,323 पुरुष तथा 37,290 महिलाएं सम्मिलित हैं, यहाँ 10 न्याय पंचायते, 126 ग्राम पंचायते, 234 गाँव तथा 15,787 परिवार निवासित हैं प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन हेतु सरसों ग्राम में निवासित वृद्धों को लिया गया है।

सरसों गाँव की कुल जनसंख्या 1,396 है, इसमें 729 पुरुष तथा 667 महिलाएँ हैं। यहाँ का लिंगानुपात 915 है जो उत्तराखण्ड के औसत 963 से कम है, साक्षरता दर 93.55 प्रतिशत है, यहाँ कुल 310 परिवार निवासित है, सरसो ग्राम में 141 एकाकी तथा 169 संयुक्त परिवार पाये गये। अतः इन संयुक्त परिवारों के 50 प्रतिशत ऐसे परिवारों का चयन किया गया जिनमें 60 वर्ष या इससे ऊपर की आयु के स्त्री–पुरुष निवास करते है। अतः वृद्धजनों की कुल संख्या 85 है जिन्हें अध्ययन की इकाई के रूप में चुना गया है। अतः यह अध्ययन 85 ऐसे वद्धजनों की समस्याओं के अध्ययन पर केन्द्रित है जो 60 या इससे अधिक वर्ष के हो चुके हैं ये स्त्री और पुरुष दोनों ही है।

प्रस्तुत अध्ययन में वृद्धजनों की आयु को दो वर्गों में विभाजित किया है जिनमें 60 से 65 व 65 वर्ष से ऊपर के आयु वर्ग को सम्मिलित किया गया है, इसमें 38.83 प्रतिशत 60 वर्ष से 65 तथा 61.17 प्रतिशत 65 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के पाए गये। प्रथम प्रश्न के आधार पर पारिवारिक स्थिति से सन्तुष्टि का मूल्यांकन निम्नवत् प्राप्त हुआ।

**सन्तुष्टि संबंधी प्रत्युत्तर**

**सारणी सं0 –1.1**

| क्रं0स0 | प्रत्युत्तर का स्वरूप | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| **1** | संतुष्ट | 17 | 20.00 |
| **2** | असन्तुष्ट | 63 | 74.11 |
| **3** | तटस्थ | 05 | 05.89 |
| **4** | **योग** | **85** | **100.00** |

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 74.11 प्रतिशत वृद्धजनों ने स्वयं की पारिवारिक स्थिति से असन्तुष्ट है, 20.00 प्रतिशत ने सन्तुष्ट होना स्वीकार किया है जबकि 05.89 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की गयी, असन्तुष्टि का प्रतिशत 65 वर्ष से अधिक आयु वालों में ज्यादा पाया गया।

संयुक्त परिवारों की विशेषताओं में मुखिया की भूमिका व नियंत्रण को सम्मानजनक, व सर्वोपरि माना जाता है किन्तु वर्तमान संदर्भ में इसमें शिथिलता परिलक्षित होती है। जैसा कि अधिकांश वृद्धजनों का मानना है कि वर्तमान में उनका प्रभाव परिवार में कम होता जा रहा है इस कारण उनमें तनाव रहता है पर वे कुछ भी कहने की स्थिति में स्वयं को असमर्थ पाते हैं तथ्य निम्नवत् हैं:

**क्या मुखिया के रूप में स्वयं के प्रभाव को कम पाते है?**

**सारणी सं0 – 1.2**

| क्र0सं0 | प्रत्युत्तर का स्वरूप | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| **1** | हाँ | 53 | 62.35 |
| **2** | नहीं | 30 | 35.30 |
| **3** | पता नहीं | 02 | 02.35 |
| **4** | **योग** | **85** | **100.00** |

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 62.35 प्रतिशत उत्तरदाता वृद्धजनों ने परिवार में अपनी पूर्व भूमिका कर्ता के नियंत्रण अथवा निर्णायक प्रक्रिया में कमी को स्वीकार किया है, 35.30 प्रतिशत ने अस्वीकार तथा 02.35 प्रतिशत ने असमंजस की स्थिति की अभिव्यक्ति करते हुए पता नहीं में अपना उत्तर दिया है।

वृद्धावस्था में लोगों को पारिवारिक लोगों की नितान्त आवश्यकता होती है, आजकल की भागदौड़ भरी जिन्दगी में जब लोग परिवार के सुख–दुख को जानने से उत्तम मोबाइल में समय व्यतीत करना साधक उपयुक्त समझते हैं ऐसे में वृद्धों में एकाकीपन का भाव देखने को मिलता है और वे स्वयं को परिवार के बीच रहते हुए भी उपेक्षित मानते हैं।

इसी तथ्य की प्रमाणिकता हेतु उत्तरदाताओं से जानना चाहा कि पारिवारिक सदस्यों द्वारा जो समय उनको दिया जाता है? क्या वे इससे संतुष्ट है प्रत्युत्तर निम्नवत् है।

**पारिवारिक सदस्यों द्वारा दिये गये समय से वृद्धों की सन्तुष्टि संबंधी तथ्य**

**सारणी सं0 –1.3**

| क्रं0स0 | प्रत्युत्तर का स्वरूप | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| **1** | हाँ | 23 | 27.06 |
| **2** | नहीं | 59 | 69.42 |
| **3** | थोड़ा बहुत | 03 | 03.52 |
| **4** | **योग** | **85** | **100.00** |

उपरोक्त सारणी में सर्वाधिक 69.42 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि आजकल बच्चों के पास हमारे लिए समय नहीं है 27.06 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बच्चों या परिवार के समय देने की बात कही है जबकि 03.52 प्रतिशत उत्तरदाता थोड़ा बहुत समय दिये जाने की बात की पुष्टि करते है।

यह सर्वविदित है कि समयानुसार वृद्धजनों द्वारा स्थापित नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है जो पीढ़ीयों के बीच टकराहट का प्रमुख कारण है, क्योंकि जिन नियमों, मूल्यों व नियंत्रणों को इन वृद्धों ने पारिवारिक, सामाजिक, अनुशासित व्यवस्था के लिए बनाया था वह अब विलुप्त हो गयी हैं और पारिवारिक युवा इन नियमों को वर्तमान जीवन जीने के लिए पिछड़ा हुआ मानते हैं ।

मूल्यों की टकराहट से क्या वृद्धजन आहत होते हैं या सांमजस्य स्थापित कर सहयोग देते है को जानने के लिए पूछा गया कि जब आप द्वारा स्थापित नियमों का उल्लंघन किया जाता है तो आप कैसा अनुभव करते हैं।

**नियमों का उलंघन करने पर वृद्धजनों की मनोदशा का विवरण सारणी में**

**सारणी सं0 1.4**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

| क्र0सं0 | प्रत्युत्तर का स्वरूप | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | सामान्य | 13 | 15.29 |
| 2 | बहुत दुख होता है। | 54 | 63.53 |
| 3 | समय परिवर्तन को स्वीकार कर लेते है। | 03 | 03.53 |
| 4 | चुप रह जाते हैं | 15 | 17.65 |
| 5 | **योग** | **85** | **100.00** |

63.53 प्रतिशत वृद्धजनों का मानना है कि उन्हें दुख बहुत होता है 15.29 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य रहने, 03.53 प्रतिशत समय परिवर्तन व सामंजस्य तथा 17.65 प्रतिशत लोगों ने चुप रहने की बात को स्वीकार किया है।

**नोट :**

- सामान्य रहने वाले वृद्ध मानते हैं कि जो हो रहा है उसे वैसे ही स्वीकार इसलिए कर लेते हैं क्योंकि युवाओं द्वारा वृद्धों का अपमान या अभद्रता करने पर बच्चों के माता–पिता भी चुप रहते है। अर्थात् मौन रूप से ही सही वे उन्हें सहयोग करते हैं।
- कुछ वृद्ध मानते हैं कि उनके द्वारा जो भी बात अथवा सीख पारिवारिक सदस्यों को दी जाती है उसमें उनका हित, कल्याण और परिवार की मर्यादा निहित होती है और जब इसका विरोध होता है, उन्हें अन्दर तक पीड़ा होती है।
- बहुत कम ही सही लेकिन ऐसे वृद्ध भी पाये गये जो मानते थे कि यदि आगे का जीवन सही तरीके से संचालित करना है तो समयानुसार स्वयं को परिवर्तित करना ही बेहतर है।
- अंत में कुछ बुजुर्गो ने कहा कि वे राय तो देते हैं लेकिन कभी भी उनका पालन नहीं होता या अशोभनीय व्यवहार के लिए कुछ समझाने का प्रयास किया जाता है, तो कलह की स्थिति उत्पन्न होती है अतः चुप रहना ही बेहतर होता है, लेकिन अंदर ही अंदर घुटन व मानसिक तनाव हमेशा बना रहता है।

सरसो ग्राम के अधिकांश चयनित वृद्धजन कृषि व्यवसाय से जुड़े है। बढ़ती आयु के साथ–साथ उनके शारीरिक श्रम में कमी आना स्वाभाविक है। उनका मानना है कि जब तक शरीर ने साथ दिया उनके द्वारा सभी प्रकार का श्रम किया गया चाहे वे शारीरिक हो (कृषि कार्य में संबंधित) या बाजार से सामान लाना अथवा अन्य लेकिन वर्तमान में उनके द्वारा अनुभव किया जा रहा है कि शारीरिक कमजोरी के कारण वे कार्य अब नहीं किये जाते जो पूर्व में किये जाते थे तब ऐसी स्थिति में पारिवारिक उल्हना उनकी वास्तविकता को न समझ पाना या पूर्व की भाँति ही कार्य की अपेक्षा ये ऐसी स्थितियाँ है जो उनके मन मस्तिष्क में बुरा प्रभाव डालती है और वे स्वयं को असहाय सा महसूस करते हैं, जानने का प्रयास किया गया कि पारिवारिक सदस्य आपसे वर्तमान में किस प्रकार के कार्यों की अपेक्षा करते हैं।

**कार्य संबंधी अपेक्षाओं का विवरण**

**सारणी सं0 –1.5**

| क्र0सं | प्रत्युत्तर का स्वरूप | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | पूर्ववत् | 58 | 68.24 |
| 2 | पहले से कम | 21 | 24.70 |
| 3 | शारीरिक साम्थर्य के अनुसार | 06 | 07.06 |
| 4 | **योग** | **85** | **100.00** |

उपरोक्त सारणी में वृद्धजनों द्वारा दिये गये तथ्यों के आधार पर 68.24 प्रतिशत ने जैसे पहले कार्य करते थे उसी प्रकार की आज भी पारिवारिक सदस्यों की अपेक्षा का होना स्वीकार किया है, जबकि 24.70 प्रतिशत ने पहले से कम कार्य करना चाहिए संबंधी अपेक्षाओं में सहमति दी, जबकि 07.06 प्रतिशत वृद्धजनों ने पारिवारिक सहयोग के कारण कार्य संबंधी अपेक्षाओं को शारीरिक साम्थर्य के अनुसार होना बलताया है।

वृद्धवस्था में व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक दोनों प्रकार की नियमित देख रेख की निंतांत आवश्यकता होती है, लेकिन ग्रामीण समाज में सुविधाओं के अभाव के कारण यह बात लागू होती नहीं दिखायी देती है। वृद्धजनों से नियमित स्वास्थ्य परीक्षण होने संबंधी जानकारी का विवरण निम्नवत् है।

**क्या आपका नियमित स्वास्थ परीक्षण होता है**

**सरणी सं0 –1.6**

| क्र0सं | प्रत्युत्तर का स्वरूप | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | हाँ | 03 | 03.53 |
| 2 | नहीं | 82 | 96.47 |
| 3 | **योग** | **85** | **100.00** |

केवल 03.53 प्रतिशत वे वृद्धजनों जिनके बेटे बाहर नौकरी करते हैं, स्वीकार किया है कि उनके स्वास्थ्य का नियमित परीक्षण होता है।

जब नियमित को हमने जानना चाहा तो स्पष्ट किया गया कि जब बच्चे घर आते है, तो परेशानी होने पर डाक्टर को दिखा लाते हैं ये अवधि एक साल दो साल या अधिक भी हो सकती है, लेकिन अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वास्थ खराब होने की स्थिति में बाज़ार से दवा मंगा कर खा लेने की बात कही है उनका नियमित परीक्षण गम्भीर अवधि में ही होता है, जो स्वीकार किया है। इनमें पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक पायी गयी है।

**निष्कर्ष–** निष्कर्षत कहा जा सकता है कि वृद्धावस्था अनिवार्य व सार्वभौमिक प्रक्रिया है जिसमें आयु के बढने के साथ ही मनुष्य को भावात्मक एवं उचित संरक्षण व देख रेख की आवश्यकता होती है। लेकिन पारिवारिक सदस्यों द्वारा आधुनिकता के कारण उनकी अनदेखी उनके प्रति लापरवाही, उन्हें मानसिक व शारीरिक रूप से कमजोर बना देती है, परिवार के बीच में रहकर भी स्वयं में

**I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)**
**e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)**
**Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025**

एकाकीपन का अहसास उनमें तनाव व घबराहट पैदा करता है। वे स्वयं के मान–सम्मान में गिरावट पाकर दुखी होते हैं। समय न देने के कारण ही आज की युवा पीढ़ी उनके द्वारा संग्रहीत ज्ञान का लाभ नहीं उठा पाते और परम्परागत ज्ञान विघटित हो रहा है।

सामाजिक संरचना में आए इस नवीन बदलाव ने वृद्धजनों के समक्ष विभिन्न समस्याओं व चुनौतियों को विकसित किया है, परिवार में उनकी गिरती शाख, परिवार में स्वयं को सम्मानजनक स्थिति में न पाना, स्वयं के प्रभुत्व व प्रभाव में कभी महसूस करना, पारिवारिक सदस्यों का उन्हें समय न दिया जाना, उनके स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही, अपनी बात को खुलकर न कह पाना आदि सारी समस्याएँ उन्हें झकझोर देती है, इससे तनाव उत्पन्न होता है और तनाव से बीमारी और बीमारी से शारीरिक, मानसिक कमजोरी जो इनके लिए एक गम्भीर समस्या है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 104 मिलियन वृद्ध लोग 60 या इससे अधिक वर्ष के हैं, जो कुल जनसंख्या का 08.60 प्रतिशत है। इनमें महिलाओं की संख्या तुलनात्मक रूप से अधिक है। इनकी देख–रेख, संरक्षण, सम्मान, प्रतिष्ठा आदर हम सब की जिम्मेदारी है। ऐसा करने पर ही हमें उनके द्वारा संग्रहित अक्षय ज्ञान के भण्डार का लाभ हो पायेगा और हम अपने समाज को उनके द्वारा विकसित परंपरागत ज्ञान से लाभान्वित कर पायेंगे।

## सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत में सामाजिक समस्याएं, 1993 सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ. इन्दिरा गांधी मुक्त वि0 वि0, ई0 एस0 ओ0–06, पृ0सं0 45.
2. गिडेन्स, एन्थोनी. 2001 सोशियालॉजी. पॉलिटी प्रेस, कैंब्रेज, पृ0सं0 223.
3. भाटिया, एच0एस0. 1964 ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन एवं वृद्धावस्था की समस्याए. सोशल वेलफेयर, पृ0सं0 3–6.
4. हानमैन, डेविड. ;1979द्ध द सोशियल चैलेज ऑफ एजिंग क्रॉम हैल्प. लन्दन, पृ0सं0 13.
5. देव, एण्ड दांडेकर. ;1993द्ध सब्स्ट्रेक्ट ऑफ द रिपोर्ट ओल्ड एज्ड एण्ड देयर प्रॉब्लमर्स. सोशल इन्टरवेशन इन महाराष्ट्रा, पृ0सं0 3–6.
6. प्रकाश, इन्दिरा जय. 1997 हिंदू वर्ड व्यू एण्ड वैल बीइंग ऑफ एजिंग वूमन. रिसर्च एण्ड डेवलपमेण्ट, वौ0 03, न02, पृ0स0 18.

*****